उपसंहार

धर्मान्तरण के बाद धर्मांतरित दलित महिलाओं ने हिन्दू धर्म के संस्कारो को त्याग दिया और रूढ़ि वादी मानसिकता से बाहर आयी और उन्होंने एक नये संस्कार में प्रवेश किया वे शादियों से ढ़ो रहे गुलामी परम्परा से मुक्त हुई । उनके भीतर क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ सामाजिक चेतना आयी, उनके रहन-सहन, उनकी शिक्षा-दीक्षा में जबर्दस्त परिवर्तन हुआ । दलित महिलाओं ने धर्मान्तरण के बाद पम्परागत कार्यों का त्याग दिया। धर्मान्तरण के बाद दलित महिलाओं ने हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियां फूल मालाएं घरों के बाहर फेंक दिये, हिन्दू तीर्थ यात्रा पिंडदान, आदि धार्मिक रीति-रिवाज उन्होने त्याग दिये। डॉ. भीम राव अम्बेडकर के धर्मान्तरण के बाद नव शिक्षित दलित महिला पुरुषों में चेतना जागी, जिन्होंने परम्परागत व्यवसायों को त्याग कर लघु व्यवसाय करने लगी तथा गांव से शहर की ओर भारी संख्या में पलायन किया।

दलित महिलाओं पर धर्मांतरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। धर्मान्तरण के बाद सामाजिक असमानता व जातिय भेदभाव उच्च-नीच की भावना हेय दृष्टि समाजिक व्यवहार में बंधन ढ़ीले हुए है।

धर्मान्तरण के बाद सामाजिक राजनैतिक चेतना का सकारात्मक प्रभाव पड़ा। परिवार एवं विवाह संस्था में परिवर्तन हुआ, विवाह संस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ, नव बौद्ध एवं पुराने बौद्धों के बीच खान-पान, शादी-विवाह, रहन-सहन संस्कार आदि पाये जाते है । धर्मान्तरित दलित महिलाओं के बच्चों के नाम बौद्ध दर्शन के अनुशार पाये जाते है । धर्मान्तरण के बाद सभी संस्कार बौद्ध पद्धितियों के अनुसार ही होते हैं।

धर्मान्तरण करने के बाद शैक्षणिक गतिशीता आयी एवं किसी-न-किसी सामाजिक व राजनैतिक नारी चेतना मंच से ज्यादा से ज्यादा महिलाएँ जुड़ी है। जिनके अन्दर आन्दोलन की भावना जागृत हुई। कुछ धर्मान्तरित महिलाएँ अपनी पहचान को छिपाती है। उच्च जाति के लोग नव बौद्ध जानकर दलित समझ जाते है तथा कुछ महिलाएँ परिवर्तित धर्म एवं पूर्व जाति छिपाती है।

धर्मान्तरित समाज में रोटी-बेटी का रिश्ता पाया जाता है। लेकिन नव बौद्ध एवं हिन्दू दलितों में रोटी बेटी बहिस्कृत पाया जाता है। यह अनुसंधान, लखनऊ शहर की धर्मान्तारित दलित महिलाओ के प्रभाव का तथ्य परक एवं नारीवादी अध्ययन शोधार्थी द्वारा किया गया है ।